Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 1 | अंक 30

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

29 सितम्बर 2016 ई 26 जिल्हज्ज 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फज़ल नाज़िल करे। आमीन

मुबारक और ख़तरे से ख़ाली वह ईमान है जो ख़ुदा के रसूल के माध्यम से प्राप्त होता है क्योंकि वह ईमान केवल इस सीमा तक नहीं होता कि ख़ुदा की हस्ती की एक ज़रूरत है बल्कि सैंकड़ों आसमानी चिन्ह इस सीमा तक पहुंचा देते हैं कि वास्तव में ख़ुदा मौजूद है। अतः मूल बात यह है कि ख़ुदा में विश्वास स्थिर करने के लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर ईमान लाना खूंटूं की तरह है और ख़ुदा पर तभी तक ईमान स्थापित रह सकता है जब तक कि रसूल में विश्वास हो और जब रसूल में ईमान न रहे तो ख़ुदा पर ईमान में भी कोई आपदा आती है और शुष्क तौहीद मनुष्य को शीघ्र पथ भ्रष्टता में डाल देती है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (3):श्रीमान अब्दुल हकीम को जो आप ने ख़त लिखा है उसमें लिखा है कि प्रकृतिक ईमान एक लअनती बात है इसका मतलब भी समझ में नहीं आया।

उत्तर: सार और उद्देश्य मेरे लिखने का यह है कि जो ईमान ख़ुदा तआला के रसूल के माध्यम से प्राप्त नहीं होता और केवल मानवीय प्रकृति ख़ुदा तआला के अस्तित्व की ज़रूरत महसूस करती है जैसे दार्शनिकों का विश्वास है इसका अंतिम परिणाम प्राय लअनत (अभिशाप) होता क्योंकि ऐसा विश्वास अंधेरे से खाली नहीं होता इसलिए वे जल्दी अपने विश्वास से फिसल कर नास्तिक बन जाते हैं पहले तो प्रकृति के नियमों और प्रकृति के कानून पर ज़ोर देते हैं परन्तु चूंकि रिसालत के चिराग़ का प्रकाश साथ नहीं होता जल्द अंधेरे में पड़ कर भटक जाते हैं। मुबारक और ख़तरे से ख़ाली वह ईमान है जो ख़ुदा के रसूल के माध्यम से प्राप्त होता है क्योंकि वह ईमान केवल इस सीमा तक नहीं होता कि ख़ुदा की हस्ती की एक ज़रूरत है बल्कि सैंकड़ों आसमानी चिन्ह इस सीमा तक पहुंचा देते हैं कि वास्तव में ख़ुदा मौजूद है। अत: मूल बात यह है कि ख़ुदा में ईमान स्थिर करने के लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर ईमान लाना खूंटूं की तरह है और ख़ुदा पर तभी तक ईमान स्थापित रह सकता है जब तक कि रसूल में विश्वास हो और जब रसूल में ईमान न रहे तो ख़ुदा पर ईमान में भी कोई आपदा आती है और शुष्क तौहीद मनुष्य को शीघ्र पथ भ्रष्टता में डाल देती है इसीलिए मैंने कहा कि प्रकृतिक ईमान शापित है जिसका आधार केवल प्रकृति की कुदरत पर है और केवल प्रकृति पर है और रसूल की रोशनी नहीं आख़िर वह शापित विचार तक पहुंचा देता है। अत: ख़ुदा के रसूल को छोड़कर और रसूल के चमत्कार को छोड़कर केवल प्रकृति की दृष्टि से जो ईमान है वह एक कीचड़ की दीवार है जो आज भी नष्ट हुआ और कल भी। ईमान वास्तव में वही ईमान है कि ख़ुदा के रसूल की पहचान करने के बाद प्राप्त होता है इस ईमान को पतन नहीं होता और इसका अंजाम बुरा नहीं होता। हां जो व्यक्ति केवल मौखिक रूप से रसूल के अधीन हो गया और उसे नहीं पहचाना और उस के नूरूं से अवगत नहीं हुआ और उसका विश्वास भी कुछ बात नहीं और अंत निश्चित रूप से वह मुर्तद होगा जैसा कि मुसेलमा कज़्ज़ाब और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह और उबैदुल्लाह बिन जहश आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में और यहूदा इस्क्रयूती और पांच सौ अन्य ईसाई हज़रत ईसा के ज़माने में और जम्मू वाला चराग़ दीन और अब्दुल हकीम ख़ान हमारे इस ज़माने में मुर्तद हुए।

प्रश्न (4): पहली किताबों इज़ाला औहाम आदि में लिखा है कि यह भी कोई भविष्यवाणियां हैं कि भूकंप आएंगे, अकाल होगा, लड़ाई होंगी अकाल पड़ेंगे लेकिन अब कई लेखों में देखा गया है कि इन्हीं भविष्यवाणियों को जनाब ने भव्य भविष्यवाणियां करार दिया है।[1]

उत्तर: यह बात उचित नहीं है कि मैंने उन्हीं भविष्यवाणियों को भव्य करार दिया है हर एक चीज़ की महानता या ग़ैर महानता उसकी मात्रा और स्थिति से और साथ ही उसकी विशेष परिस्थितियों से या साधारण अवस्था से प्रकट होती है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जिस देश में प्लेग और भूकंप की ख़बर दी थी वह देश ऐसा है कि अक्सर उस में प्लेग रहती है और कश्मीर की तरह उस में भूकंप भी आते रहते हैं अकाल भी पड़ते हैं और लड़ाई का सिलसिला भी जारी रहा है और हज़रत मसीह की भविष्यवाणी में न किसी आदत से हटकर भूकंप का उल्लेख है और न किसी आदत से हट कर मरी या प्लेग का। इस स्थिति में कोई बुद्धिमान ऐसी भविष्यवाणियां को गरिमा और सम्मान की दृष्टि से नहीं देख सकता।[2] मगर जिस देश के लिए मैंने प्लेग की खबर दी और गंभीर भूकंप से सूचना दी है वह इस देश की स्थिति के अनुसार वास्तव में भव्य भविष्यवाणियां हैं। क्योंकि अगर इस देश के सैंकड़ों साल के इतिहास को देखा जाए तब भी प्रमाणित नहीं होता कि कभी इस देश में प्लेग पड़ी है और इस से हट कर ऐसी प्लेग जिसने थोड़े ही समय में लाखों इंसानों को मार डाला तो प्लेग के बारे में मेरी भविष्य वाणी के शब्द हैं कि देश का कोई हिस्सा प्लेग से खाली नहीं रहेगा और सख्त विनाश आएगा और वह विनाश लम्बे समय तक रहेगा। अब क्या कोई प्रमाणित कर सकता है कि जैसा कि अब भविष्यवाणी के अनुसार सख्त तबाहियां प्लेग से प्रकट हुईं पहले इस देश में कभी प्रकट में आई थीं। हरगिज़ नहीं। रहा भूकंप वह भी मेरी ओर से कोई मामूली भविष्यवाणी नहीं थी बल्कि भविष्यवाणी में ये शब्द थे कि एक हिस्सा देश का इससे नष्ट हो जाएगा जैसा कि स्पष्ट है कि वह विनाश जो इस भूकंप से कांगड़ा और भागसू विशेष ज्वालामुखी पर आया। दो हज़ार साल तक उसका उदाहरण नहीं मिलता कि कभी भूकंप से ऐसा नुकसान हुआ। अत: अंग्रेज़ अनुसंधान कर्ताओं ने भी यही गवाही दी है। इसलिए इस मामले में मेरे पर आपत्ति करना केवल जल्दबाज़ी है।

1 यह भी याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह की भविष्वाणियों में जो इंजीलों में पाई जाती हैं केवल मामूली और नरम शब्द हैं। किसी गंभीर और भयंकर भूकंप या भयंकर प्लेग का उन में वर्णन नहीं है, लेकिन मेरी भविष्यवाणियों में इन दोनों घटनाओं की तुलना में ऐसे शब्द जो उन्हें आदत से हट कर बताते हैं। इसी में से।

2 हां संभव है कि मूल भविष्यवाणियां विकृत हो गई हो जबकि एक इंजील की बीसियों इनजीलें बन गई हैं तो किसी पाठ में विकृत होना कौन सी ऐसी बात है जो बुद्धि से दूर हो सकता है मगर हमारी वर्तमान इनजीलों पर आपत्ति है और ख़ुदा ने इन इनजीलों को परिवर्तित और हस्तक्षेप वाली करार देकर हमें इन ऐतराज़ों का अवसर दिया है। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 162 -164)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

संदेश

प्रत्येक अहमदी को दैनिक अपनी पांचों नमाज़ों की सुरक्षा करनी चाहिए और उन्हें समय पर जमाअत के साथ अदा करना चाहिए

मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरा ख़ुत्बा जुम्अ: और दूसरे महत्त्वपूर्ण आयोजनों के भाषणों को नियमित सुनें इससे आपकी ख़िलाफत के बरकतों वाले निज़ाम से प्रतिबद्धता और बैअत के संबंध में मज़बूती पैदा होगी

आप को चाहिए कि अपने बच्चों को भी ख़िलाफत के विशेष गुण के बारे में बताएँ और समय के ख़लीफा से संबंध स्थापित करने और वफ़ादारी बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

मेरी यह इच्छा है कि हमारी जमाअत के सदस्य हमेशा अपने सुधार के लिए प्रयास करते रहें और तक्वा के उच्चतम स्तर को प्राप्त करें

अगर आप ने अपनी आध्यात्मिक अवस्थाओं में तरक्की न की तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर ईमान लाने का कोई लाभ नहीं।

सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जलसा सालना ब्लेज़ Belize सेंट्रल अमेरिका आयोजित 30 जनवरी 2016 ई

(जमाअत अहमदिया Belize (सेंट्रल अमेरिका) का दूसरा दो दिवसीय सालाना जलसा दिनांक 30, 31 जनवरी 2016 ई. को गेटवे युवा केंद्र ब्लेज़ सिटी में आयोजित हुआ। जलसा के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना संदेश भिजवाया था जो पाठकों के लाभ के लिए नीचे प्रस्तुत है। विस्तृत रिपोर्ट फज़ल इंटरनेशनल लंदन 29 जुलाई 2016 ई. में देखी जा सकती है। -संपादक)

प्रिय सदस्यों अहमदिया मुस्लिम जमात ब्लेज़ अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहु

मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप 30 जनवरी 2016 ई. को अपना दूसरा जलसा सालाना आयोजित कर रहे हैं। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला अपनी कृपा से आप के जलसा को व्यापक उपलब्धियां प्रदान करे और मुत्तकियों के इस विशेष जलसा से सारे सम्मिलित होने वाले महान आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें।

ख़ुदा तआला की कृपा से आप ने अपनी बैअत प्रस्तुत की है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है, आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आगमन के दो मुख्य उद्देश्य याद रखने चाहिए।

पहला यह कि मोमिनों की एक ऐसी जमाअत का गठन किया जाए जो अल्लाह तआला से गहरे संबंध बनाने की कोशिश करें और उनके जीवन का उद्देश्य उस की इबादत हो। दूसरा वह मानवता की सेवा करने वाले हों और इस्लाम की खूबियां और विशेषताएं सारी दुनिया में फैला दें ।

कुरआन में मानव जीवन का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत और उसकी निकटता प्राप्त करना बताया गया है। कुरआन की शिक्षाओं के अनुसार इबादत का सबसे अच्छा तरीका नमाज़ है। इसलिए प्रत्येक अहमदी को दैनिक अपनी पांचों नमाज़ों की सुरक्षा करनी चाहिए और उन्हें समय पर जमाअत के साथ अदा करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " मैं फिर तुम्हें बतलाता हूँ कि अगर ख़ुदा तआला से सच्चा संबंध, वास्तविक संबंध स्थापित करना चाहते हो तो नमाज़ पर प्रतिबद्ध हो जाओ और ऐसे प्रतिबद्ध बनो कि तुम्हारा शरीर न तुम्हारी ज़बान बल्कि तुम्हारी रूह के इरादे और भावनाएं सभी साक्षात नमाज़ हो जाएं। " (मल्फ़ूज़ात भाग,1 पृष्ठ, 170)

मानवता की सेवा के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत के लोगों के बारे में फरमाते हैं कि " ... वह ऐसी क़ौम के हमदर्द हों कि वह गरीबों की शरण हो जाएँ। यतीमों के लिए बापों की तरह बन जाएं और इस्लामी कार्यों को करने के लिए व्याकुल आशिक की तरह फिदा होने को तैयार हों और सारी कोशिश इस बात के लिए करें कि उनकी सारी बरकतें दुनिया में फैलें और इलाही मुहब्बत और मानव जाति से सहानुभूति का पवित्र स्रोत्र प्रत्येक दिल से निकले और एक जगह इकट्ठा हो कर एक नदी के रूप में बहता हुआ नज़र आए। ... क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस गिरोह को अपना प्रताप प्रकट करने के लिए और अपनी शक्ति दिखाने के लिए पैदा करना और फिर तरक्की देना चाहा है ताकि दुनिया में इलाही मुहब्बत और सच्ची तौबा और पवित्रता और वास्तविक नेकी और शांति और क्षमता और मानव जाति की सहानुभूति को फैला दे। " (मजमूआ इश्तेहार, जिल्द, 1 पृष्ठ 198-197)

मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे ख़ुत्बा जुम्अ: और दूसरे महत्त्वपूर्ण आयोजनों के भाषणों को नियमित सुनें। इससे आपकी ख़िलाफत के बरकतों वाले निज़ाम से प्रतिबद्धता और बैअत के संबंध में मज़बूती पैदा होगी। आप को चाहिए कि अपने बच्चों को भी ख़िलाफत के विशेष गुण के बारे में बताएँ और समय के ख़लीफा से संबंध स्थापित करने और वफ़ादारी बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करें। आज के युग में इस्लाम के नवीकरण का काम केवल ख़िलाफत की प्रणाली से जुड़े रह कर हो सकता है। इसलिए आप हमेशा इस पवित्र शुद्ध प्रणाली को मज़बूत करने के लिए कोशिश करते रहें और यह सुनिश्चित कर लें कि आप और आप की अगली नस्लें अहमदिया ख़िलाफत की बरकतों वीले नेतृत्व और छाया तले पनपती रहीं।

मेरी यह इच्छा है कि हमारी जमाअत के सदस्य हमेशा अपने सुधार के लिए प्रयास करते रहें और तक्वा के उच्चतम स्तर प्राप्त करें ताकि वे दुनिया में मुसलमानों का बेहतरीन नमूना बन जाएँ। अत: जैसा कि मैंने आप को अपने ख़ुत्बे जुम्अ: में बार-बार याद दिलाया है, अपने स्वयं के अवलोकन, आपने आप की समीक्षा और अपने चरित्र में निरन्तर सुधार की ज़रूरत है। यह महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने ख़ुद का आत्मनिरीक्षण करें और हर दिन अपने कर्मों की समीक्षा करें और फिर अपने दैनिक चरित्र को बेहतर बनाने की कोशिश करें, ताकि आप उच्चतम स्तर के करीब जाएं जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत के लोगों को देखना चाहते थे। अगर आप ने अपनी आध्यात्मिक हालतों में तरक्की न की तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर ईमान लाने का कोई लाभ नहीं। अल्लाह तआला आप के सालाना जलसा को बहुत सफलता प्रदान करे और आप सभी के लिए तक्वा और आध्यात्मिक में उच्च स्तर का कारण हो।

अंत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जलसा में सम्मिलित होने वालों के लिए दुआ। " अंतत: मैं दुआ पर समाप्त करता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जो इलाही जलसा के लिए सफर करे। ख़ुदा तआला उनके साथ हो और उन्हें बदला प्रदान करे और उन पर दया करे और उनकी कठिनाइयों और चिन्ता की स्थिति उन पर आसान कर दे और उनके दु:ख तथा कष्ट दूर फरमाए और उन्हें प्रत्येक कष्ट से मुक्ति प्रदान करे और उनकी आशाओं की राहें उन पर खोल दे और आख़िरत के दिन में अपने उन बन्दों के साथ उन्हें उठाए जिन पर उसका फज़ल तथा दया है और ताकि सफर के बाद उनका ख़लीफा हो। हे ख़ुदा! हे सम्माननीय तथा प्रदान करने वाले और रहीम और मुश्किल दूर करने वाले ये सभी दुआएं स्वीकार कर और हमें हमारे विरोधियों पर रौशन निशानों के साथ प्रभुत्व प्रदान फरमा कि प्रत्येक शक्ति और ताकत तुझ को ही है। आमीन । " (मजमूआ इश्तेहार, पृष्ठ 342)

वस्सलाम साभार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

किस तरह अल्लाह तआला दुनिया के विभिन्न देशों में रहने वाले लोगों के दिलों में तहरीक करता है। कुछ को रउया के माध्यम से अहमदियत की प्रामाणिकता बता रहा होता है। कहीं कोई किताब या साहित्य तब्लीग़ का कारण बन जाता है। कहीं अहमदियत का विरोध अहमदियत की तब्लीग़ में खाद का काम देती है। कहीं अहमदियों के आचरण दूसरों को अहमदियों की ओर आकर्षित करते हैं फिर ऐसी घटनाएं भी हैं जो दूर दराज़ के देशों में रहने वाले लोगों के अहमदियत पर ईमान और विश्वास के अद्‌भुत नज़ारे भी हमें दिखाती हैं। बच्चों के प्रशिक्षण को देखें तो अहमदियत स्वीकार करने या अहमदियों की संगत में रहने से बच्चों में भी अद्‌भुत परिवर्तन पैदा होता है जो अन्य भी महसूस किए बिना नहीं रह सकते। संक्षेप में अगर इंसाफ की दृष्टि से देखें तो हम कह सकते हैं कि हम वास्तव में एक प्रणाली के अधीन इस्लाम का सच्चा संदेश पहुंचाने की कोशिश करते हैं लेकिन जो फल अल्लाह तआला लगाता है वह इस से बहुत अधिक हैं, जो हमारी कोशिश होती है या हम कह सकते हैं और यह सच है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से इस्लाम का संदेश पहुंचाने और लोगों के सीने इसे स्वीकार करने के लिए खोलने का काम ख़ुद अल्लाह तआला कर रहा है निश्चित रूप से हर सही बुद्धि वाले अहमदी को इस बात का पूरा एहसास है और वह जानता है कि अहमदियत की तरक्की हमारी कोशिशों और संसाधनों से नहीं बल्कि अल्लाह तआला के फज़्लों से हो रही है।

पिछले वर्ष दुनिया के विभिन्न देशों में प्रकट होने वाले अल्लाह तआला के समर्थन तथा सहायता के विभिन्न चमकदार निशानों और ईमान वर्धक घटनाओं का सुन्दर वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अगस्त मार्च 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ۔ أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ۔ بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ ۔ اَلْحَمْـدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِـيْنَ۔ اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ ۔ مٰلِـكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ ۔اِيَّـا كَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْـتَعِيْنُ۔ اِهْدِنـَا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْـنَ اَنْعَمْـتَ عَلَيْـهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُـوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَاالضَّآلِّـيْنَ ۔

ब्रिटेन के जलसे के दूसरे दिन अल्लाह तआला के फज़्लों की बारिश की चर्चा होती है, जहां विभिन्न विभागों के आंकड़े प्रस्तुत होते हैं। जमाअत की तरक्की की चर्चा होती है। इन आंकड़ों के साथ में उन से संबंधित घटनाऐं भी वर्णन करता हूँ लेकिन डेढ़ दो घंटे में आंकड़ों तथा विवरण वर्णन नहीं किया जा सकता और न ही घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है और जो नोटस पढ़ने के लिए लाता हूँ वह लगभग उसी तरह वापस चले जाते हैं। प्रत्येक वर्ष के आंकड़े तो विस्तार से तहरीक जदीद ने प्रकाशित करने शुरू किए हैं। किताब के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। जहां तक घटनाओं का संबंध है वह विभिन्न समयों में वर्णन करता रहता हूँ। आज भी उनमें से कुछ घटनाओं का वर्णन करूँगा जिनसे पता चलता है कि किस तरह अल्लाह तआला दुनिया के विभिन्न देशों में रहने वाले लोगों के दिलों में तहरीक करता है। कुछ को रउया के माध्यम से अहमदियत की प्रामाणिकता बता रहा होता है। कहीं कोई किताब या साहित्य तब्लीग़ का कारण बन जाता है। कहीं अहमदियत का विरोध अहमदियत की तब्लीग़ में खाद का काम देती है। कहीं अहमदियों के आचरण दूसरों को अहमदियों की ओर आकर्षित करते हैं फिर ऐसी घटनाएं भी हैं जो दूर दराज़ के देशों में रहने वाले लोगों के अहमदियत पर ईमान और विश्वास के अद्‌भुत नज़ारे भी हमें दिखाते हैं। बच्चों के प्रशिक्षण को देखें तो अहमदियत स्वीकार करने या अहमदियों की संगत में रहने से बच्चों में भी अद्‌भुत परिवर्तन पैदा होता है जो अन्य भी महसूस किए बिना नहीं रह सकते। संक्षेप में अगर इंसाफ की दृष्टि से देखें तो हम कह सकते हैं कि हम वास्तव में एक प्रणाली के अधीन इस्लाम का सच्चा संदेश पहुंचाने की कोशिश करते हैं लेकिन जो फल अल्लाह तआला लगाता है वह इस से बहुत अधिक हैं, जो हमारी कोशिश होती है या हम कह सकते हैं और यह सच है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से इस्लाम का संदेश पहुंचाने और लोगों के सीने इसे स्वीकार करने के लिए खोलने का काम ख़ुद अल्लाह तआला कर रहा है जब अल्लाह तआला ने आप से फरमाया कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा तो बहुत सारा काम ख़ुद अल्लाह तआला करता है और निश्चित रूप से हर सही बुद्धि वाले अहमदी को इस बात का पूरा एहसास है और वह जानता है कि अहमदियत की तरक्की हमारी कोशिशों और संसाधनों से नहीं बल्कि अल्लाह तआला के फज़्लों से हो रही है। अब और भूमिका के स्थान पर कुछ घटनाएं वर्णन करता हूँ।

एक घटना यह है। गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि जमाअत के परिचय पर आधारित दो पृष्ठों का लीफ लेट ख़ुदा तआला की कृपा से देश में फैल चुका है और हमें देश के दूर दराज़ क्षेत्रों से फोन कॉल प्राप्त हो रहे हैं कि हम अपने बुज़ुर्गों से इमाम महदी और मसीह के बारे में सुना करते थे। अब आप की यह पुस्तिका देख कर हमें उत्सुकता है कि हम आप से मिलें। क्योंकि हमें लगता है कि अब वह समय आ गया है जब मुसलमानों को एक सुधारक की ज़रूरत है। इसी तरह अल्लाह तआला की कृपा से बहुत से लोगों ने हमारे से संपर्क किया और वे बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए।

अब पुस्तिकाएं सिर्फ पता बताने के लिए है। एक माध्यम बना है लेकिन अल्लाह तआला ने दिलों को पहले तैयार किया था और जो बुद्धि वाले हैं वे महसूस करते हैं कि यह समय है जिस में एक सुधारक की ज़रूरत है। मसीह और महदी की ज़रूरत है कौन कह सकता है कि दूर दराज़ के इलाके में किसी के प्रभाव में अहमदियत स्वीकार की गई है या अहमदियत की ख़बरें पहुंचीं। अत: यह अल्लाह तआला का ही काम है किसी मानव के प्रयास का इस में दखल नहीं।

फिर तंज़ानिया एक और देश है पहले पश्चिमी अफ़्रीका था। अब यह पूर्वी अफ़्रीका की घटना है। डोडमा एक शहर है वहाँ के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि कुरआन की एक प्रदर्शनी के दौरान एक महिला हमारे स्टाल पर आई और बड़े आश्चर्य से पूछने लगी क्या यह मुसलमानों का स्टाल है फिर धीरे धीरे पुस्तकों से परिचय प्राप्त करती रही। अंत में एक किताब ख़रीदी जिसमें ईसाई धर्म के बारे में सामग्री थी फिर एक दिन बाद वही स्त्री अपने पति के साथ फिर स्टाल पर आई और उस दिन वे दोनों सैन्य वर्दी पहने थे। दोनों सैनिक थे। वह स्त्री कहने लगी कि यह मेरा पति है और हमारी शादी को काफी समय हो चुका है मैं मुसलमान हूँ और यह ईसाई है और औरत कहती है कि मेरी काफी देर से कोशिश थी कि इस्लाम की शिक्षा बताऊँ और मुसलमान करूं लेकिन कहीं से इस्लाम की शिक्षा के बारे में मुझे कोई ऐसी अच्छी सामग्री नहीं मिल रही थी। कल जब मैं आप के स्टाल पर आई तो मुझे लगा कि आज मैं सही जगह पर आई हूँ। अत: मैंने आप से कल एक किताब ख़रीदी और अपने पति को दी जिस से इन के पर्याप्त प्रश्न हल हो गए और बाकी जो कुछ सवाल रह गए थे वह कहने लगी कि मुझे आशा है कि आप से बात करके आज हल हो जाएंगे। अत: काफी देर इन दोनों की मुबल्लिग़ के साथ बातचीत होती रही

और अंत में उसका पति भी इस्लाम स्वीकार करने के लिए तैयार हो गया और वे दोनों बैअत कर के वास्तविक इस्लाम अर्थात अहमदियत में सम्मिलित हो गए। पति के इस्लाम स्वीकार करवाने की सच्चे तड़प ने अल्लाह तआला की कृपा को इस तरह खींचा कि संयोग से वह वहां आ भी गई और फिर दोनों को अल्लाह तआला ने सच्चे इस्लाम की आगोश में आने की तौफीक दे दी है।

फिर यह सिर्फ अफ्रीका की ही बात नहीं कि पुस्तिका के माध्यम से या तब्लीग़ के माध्यम से संदेश पहुंच रहे हैं या लोगों में जिज्ञासा केवल अफ्रीका में और तीसरी दुनिया के लोगों में है बल्कि हमारे यहाँ हरस फील्ड के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि यहां भी बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो इस्लाम के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। कहते हैं कि बारनज़ले (Barnsley) टाउन में तब्लीग़ की पुस्तिकाएं वितरित की गई जिसके कारण से वहां संपर्क स्थापित हुआ। अत: कहते हैं कुछ समय बाद वहां से पचास से अधिक लोग पुरुष और महिलाऐं कोच करवा कर हरस क्षेत्र में हमारी मस्जिद में आए और उनका उद्देश्य इस्लाम के बारे में जानकारी लेना था प्रतिनिधिमंडल के साथ मस्जिद में अढ़ाई घंटे का कार्यक्रम हुआ और इस्लाम और अहमदियत के बारे में उन्हें प्रस्तुति (Presentaion) दी गई जिसके बाद सवाल-जवाब भी हुए। तो यहाँ भी यह लोगों का ख़ुद आना और ख़ुद ध्यान देना यह भी एक कड़ी है कि अल्लाह तआला अब हर जगह दुनिया में लोगों के दिलों की तारों को हिला रहा है। एक ओर इस्लाम का विरोध हो रहा है एक ओर इस्लाम को बदनाम करने वाले ख़ुद मुसलमान बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं और इसके परिणाम स्वरूप ग़ैर मुस्लिम सीमा से आगे जाना शुरू हो गए हैं और दूसरी ओर अल्लाह तआला ख़ुद भी एक हवा चला रहा है जिस से लोगों में वास्तविक इस्लाम को समझने की ओर आकर्षण भी पैदा हो रहा है।

फिर हम देखते हैं कि दूर दराज़ के रहने वालों के दिलों को ईमान के मामले में कैसे अल्लाह तआला ने मज़बूत किया और उनमें बलिदान की भावना भी पैदा की। बेनिन के अमीर साहिब लिखते हैं कि अलाडा क्षेत्र की एक जमाअत सोको (Soko) में फरवरी में इस साल नई मस्जिद का निर्माण हुआ। मस्जिद के निर्माण में जमाअत के लोगों ने बहुत ईमानदारी और प्यार के साथ भाग लिया और कई चरणों में असामान्य रूप से समय और माल की पेशकश करते हुए मज़दूरों की सहायता भी करते रहे। महिलाएं भी निर्माण कार्य के लिए दूर दूर से पानी लेकर आती रहीं और इस तरह मस्जिद के निर्माण में भाग लेती रहीं। वहां गांव के अपने जो स्थानीय पारंपरिक सदर हैं उन्होंने कहा कि यह मस्जिद क्षेत्र के लोगों के लिए शांतिपूर्ण इस्लाम की स्थापना का स्थान है। इसी तरह वहां के जो प्रमुख थे उन्होंने कहा कि मस्जिद अलाडा क्षेत्र की इस परिषद के लिए निश्चित रूप से प्रकाश का मीनार और रास्ता है। इस क्षेत्र के लोग अधिकतर मूर्ति पूजा के धर्म से संबंधित हैं वहां एक स्थानीय चीफ जो अपने छोटे क्षेत्रों के राजा कहलाते हैं, कहने लगे में भी एक समय में बुत की पूजा करता था लेकिन आज अहमदियत की बदौलत तौहीद को मानने वाला हो गया हूँ और उसने लोगों से कहा कि मैं आप सभी को आश्वस्त करता हूं कि यह जमाअत सत्य और प्रेम का सन्निहित नमूना है और जमाअत अहमदिया की बदौलत ही मुझे यह एहसास हुआ है कि यद्यपि मैं एक राजा हूँ मगर मेरे ऊपर एक महान सम्राट है जिस की इबादत हम सब पर अनिवार्य है।

अब अल्लाह तआला ही है जो यह सोच मन में पैदा करता है कि जमाअत अहमदिया का संदेश भी सच्चा है और इस्लाम की शिक्षा भी सच्ची है और यही वास्तविक शिक्षा और संदेश है जो जमाअत अहमदिया दुनिया में फैला रही है और यही वह शिक्षा है जिससे मुशरिक लोग तौहीद को मानने वाले बन रहे हैं। इस क्षेत्र के एक और अधिकारी ने यह भी कहा कि जब इस क्षेत्र में इस्लाम की तब्लीग़ हुई और लोगों का ध्यान इस्लाम और अहमदिया जमाअत की ओर हुआ तो मेरे पास बहुत से लोग जो इस्लाम के नाम से भयभीत थे और जमाअत के पक्ष में नहीं थे आए और यह भय को व्यक्त किया कि ये लोग दूसरे आतंकवादी संगठनों की तरह हमारे लोगों को मारने और बच्चों का अपहरण करने की कोशिश से आए हैं इसलिए इस क्षेत्र के जो अधिकारी थे कहते हैं हम ने अपने युवाओं की ड्यूटी लगाई जो रात में अलग अलग समय में जाकर क्षेत्र के अहमदी लोगों की गतिविधियों की समीक्षा करते थे कि जमाअत किसी प्रकार की कोई ग़ैर कानूनी गतिविधियों में लिप्त तो नहीं लेकिन बड़े शोध और अनुभव के बाद अब हम संतुष्ट हैं कि जमाअत का उद्देश्य केवल शांति की स्थापना है।

अहमदियत के विरोधी बड़ी लालचों के द्वारा लोगों को अहमदियत से हटाने की कोशिश करते हैं लेकिन अल्लाह तआला ज़ाहिर में इन दूर दराज़ के क्षेत्रों में रहने वालों और कम शिक्षित और अनपढ़ लोगों के ईमानों को भी मजबूती प्रदान कर रहा है।

बेनिन में एक स्थान बोज़नपे (Bozinkpe) से हमारे स्थानीय मुअल्लिम कहते हैं कि कुछ लोगों को बैअत की तौफीक़ मिली और नई जमाअत की स्थापना हुई। कहते हैं कि बैअत करने से पहले ये लोग मुसलमान थे और एक और शहर की एक मस्जिद के प्रभाव में थे। क़रीब में शहर था बड़ा। बैअत के बाद उन लोगों से लगातार संपर्क रखा गया। वहां कक्षाएं शुरू की गई क़ुरआन नमाज़ और दूसरी इस्लामी बातें सिखाई गईं। कुछ समय बाद जब इस क्षेत्र के इमाम को ज्ञान हुआ तो उसने जमाअत के ख़िलाफ बातें करना शुरू कीं कहने लगा कि अहमदी तो मुसलमान ही नहीं हैं। यह काफ़िर हैं। आप लोग उन्हें छोड़ दें। उस पर नए अहमदियों ने कहा कि हम लोग बड़े समय से इस क्षेत्र में मौजूद हैं। आप लोगों ने न तो कभी यहाँ आकर हमारी ख़ैरियत पूछी न हमारे बच्चों की धार्मिक शिक्षा के बारे में कभी पूछा। अब अहमदियों ने आकर हमें और हमारे बच्चों को नमाज़ और कुरआन पढ़ाना शुरू किया है तो आप कह रहे हैं कि वह मुसलमान नहीं हैं यह बात हमारी समझ से ऊपर है। जो लोग हमें नमाज़ और कुरआन सिखा रहे हैं उन लोगों को कैसे काफ़िर कहें और अल्लाह तआला की कृपा से वे सब दृढ़ हैं और अब इस क्षेत्र में यहाँ इस जगह पर अल्लाह तआला ने जमाअत को पक्की मस्जिद बनाने की भी तौफीक दे दी है।

फिर बेनिन के एक और मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि रेडियो तब्लीग़ी कार्यक्रम के दौरान एक दिन एक दोस्त गां होंतो एरिक (Gan Hounouto Eric) साहिब की फोन कॉल आई। महोदय हमें अपने गांव में तब्लीग़ के लिए आने के लिए आमंत्रित किया। कहते हैं वह अभी अपना पता बता रहे थे कि फोन कॉल कट गई और बात पूरी नहीं हो सकी। लिखते हैं कि एक दिन हम तब्लीग़ के लिए एक गांव सनवे पोता (Sinwe Kpota) पहुंचे तो एक आदमी हमें देख कर खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि जल्दी इधर आओ। जिन्हें हम रोज़ रेडियो पर सुनते थे वह आज ख़ुद हमारे गांव आ गए हैं अत: वहां तब्लीग़ के परिणाम में 200 से अधिक लोगों ने बैअत की और एक नई जमाअत की स्थापना हुई।

अभी बैअत किए कुछ दिन हुए हैं लेकिन ईमान की मजबूती का हाल भी सुन लें। कहते हैं कि बैअत करने के दो दिन बाद तेज़ बारिश और आंधी के कारण एरिक साहिब जो एक अहमदी थे उनके घर की दीवार गिर गई। जिस के नीचे आकर उनका आठ माह का बच्चा मर गया। मूर्तिपूजकों का गांव था जिस पर कुछ मुशरिकीन ने कहा कि देखो तुम इस जमाअत पर ईमान लाए हो और अब कठिनाइयां आनी शुरू हो गई हैं जिस पर उसने कहा कि मैंने जो सच्चाई देखी उस पर ईमान ले आया बाकी बच्चे और धन दौलत ख़ुदा ही देता है और वही वापस भी ले लेता है। मैं इस जमाअत से कभी पीछे नहीं हटूंगा चाहे कुछ भी हो। मैंने अहमदियत स्वीकार की है। मैं अहमदी हूँ और इंशा अल्लाह तआला मरते दम तक अहमदी ही रहूंगा। तो यह है ईमान की मज़बूती और तौहीद पर स्थापित होना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह तआला लोगों के दिलों में पैदा फरमा रहा है। उन्होंने अपनी निजी ज़मीन का एक हिस्सा नमाज़ केंद्र बनाने के लिए भी दिया बल्कि इसमें स्वयं ही एक मामूली सा छप्पर आदि की तुरंत व्यवस्था कर दी ताकि कुरआन की कक्षाएं शुरू की जा सकें।

अल्लाह तआला किस तरह अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का संदेश पहुंचाने के रास्ते खोलता है। इस बारे में तंजानिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि शियांगा क्षेत्र के एक गांव बूतीबू (Butibu) में इस साल एक नई जमाअत की स्थापना हुई। इसी क्षेत्र के एक और गांव में तब्लीग़ का कार्यक्रम आयोजित हो रहा था वहां बूतीबू (Butibu) गांव की एक महिला संयोग से पहुंची और उसने जब जमाअत अहमदिया का संदेश सुना तो कहने लगी आप लोग हमारे गाँव में भी इस्लाम का संदेश लेकर आएं क्योंकि वहाँ कुछ मुसलमान हैं और उनकी एक मस्जिद भी है लेकिन जो इस्लाम आप लोग दे रहे हैं वह उनके इस्लाम से काफी अलग है। अत: जब हमारे मुअल्लिमों ने वहां जाकर इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ की तो पहले ही दिन इमाम मस्जिद सहित कुल 93 लोगों जमाअत में शामिल हो गए। जब इस क्षेत्र के सुन्नी मौलवी को पता चला कि ये लोग अहमदी हो गए हैं तो इस गांव पहुंचा और कहने लगा तुम लोग गुमराह हो गए और भटक गए हो। ये लोग मुसलमान नहीं हैं। इस पर नए अहमदियों ने कहा कि हम ने सोच समझकर अहमदियत स्वीकार की है और यही वास्तविक इस्लाम है इसलिए हम तुम्हारी कोई बात नहीं सुनेंगे। जब लोगों ने मौलवी की बात नहीं सुनी तो इन का जो बड़ा मौलवी था वहां के स्थानीय इमाम को कहने लगा कि तुम मुझे दफतर आकर मिलो। इस पर स्थानीय इमाम ने

ने इनकार कर दिया कि मैं नहीं आऊँगा। अल्लाह तआला की कृपा से यह सब नए अहमदी जमाअत के साथ संबंध में मज़बूत हो रहे हैं और चन्दा के निज़ाम में भी शामिल हैं। वे गरीब लोग हैं कई बार यात्रा के लिए किराया भी जमा नहीं कर सकते लेकिन सब ने केंद्र में शूरा का प्रतिनिधि भेजने के लिए चंदा इकट्ठा करके अपना प्रतिनिधि भेजा और इन्हीं नए अहमदियों के कारण से निकट के दो और नए गांव में भी जमाअत का पौधा लग चुका है और जमाअत का निज़ाम स्थापित हो चुका है।

इसी तरह शियांगा तंजानिया में शियांगा क्षेत्र के एक और गांव में जमाअत की स्थापना हुई। पिछले कई सालों से मुसलमान थे। एक कच्ची मस्जिद भी थी। जब हमारे मुअल्लिम सिलसिला उस क्षेत्र में पहुंचे और तब्लीग़ी कार्यक्रम आयोजित हुए तो गांव के 130 लोग इमाम मस्जिद के साथ बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए। अहमदी होने के बाद उन लोगों के बड़े बुज़ुर्ग ईदी साहिब अप्रैल में हमारी दारुस्सलाम में शूरा में भी आए और जमाअत की मज़बूत प्रणाली देखकर बहुत प्रभावित हुए। कहने लगे कि मैं 1993 ई से मुसलमान था लेकिन हम भाग्यशाली हैं कि हमें जमाअत में शामिल होने की तौफीक़ मिली।

बुर्किना फासो एक और अफ्रीका का देश है। जहां फ्रेंच बोली जाती है। वहां के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि इस साल जमाअत को तींगोडको क्षेत्र में एक बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद निर्माण करने की तौफीक मिली। इस गांव में जब अहमदियत का आरम्भ हुआ तो गांव के लोगों ने इमाम सहित बैअत की थी। विरोधी मौलवी उस गांव में गए और उन्होंने कहा कि आप अहमदियत को छोड़ दें तो हम आपको अपनी बहुत सुंदर मस्जिद दे देंगे। अल्लाह तआला की कृपा से अहमदी इमाम ने जमाअत अहमदिया का दामन थामे रखा और जमाअत की कच्ची मस्जिद जो कुवैत के पैसे या अरब देशों के पैसे से बनाई जाने वाली मस्जिद थी उस पर इस कच्ची मस्जिद को प्राथमिकता दी। अब अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत को वहाँ एक पक्की मस्जिद बनाने की तौफीक़ मिली है। जो मुख्य राजमार्ग के ऊपर बनी हुई है क्योंकि हमारी मस्जिद की ख़बर पूरे शहर और सभी आसपास के क्षेत्रों में पहुंच चुकी है। इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर आसपास के गांवों के सारे इमाम और कुछ प्रमुख भी आए थे और क्षेत्र के राजा भी शामिल हुए एक विरोधी इमाम ने तीन बार पूछा जो कि विरोध किया करता था कि जो मैंने देखा है, क्या यही अहमदियत है? कहने लगे कि इसका अर्थ है कि मैंने जमाअत अहमदिया के बारे में जो कुछ सुन रखा था वह सब झूठ था लेकिन आज मैं कह सकता हूँ कि अहमदियत से बढ़कर और कोई इस्लाम हो ही नहीं सकता। इसलिए जो वास्तविक मुसलमान हैं जिन्हें इस्लाम का दर्द है जो इस्लाम को दुनिया में फैलता देखना चाहता हैं वह जमाअत अहमदिया से बाहर होकर कभी सोच भी नहीं सकते और नि:संदेह आज जमाअत अहमदिया को छोड़कर इस संदेश को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से इस्लाम का विस्तार हो रहा है और जिसने फैलना था, और कहीं यह वास्तविक इस्लाम नज़र आ ही नहीं सकता।

बेनिन के अमीर साहिब लिखते हैं कि बोहीकों (Bohicon) क्षेत्र की एक जमाअत में मस्जिद निर्माण हुई। इस गांव में मार्च 2015 ई में अहमदियत का पौधा लगा था। और 245 लोग अहमदियत की आगोश में आए। जब से इस जमाअत ने अहमदियत स्वीकार की है उन्हें लगातार विरोध का सामना है। रिश्तेदारों से भी विरोध हुआ। गांव के इमाम ने भी कड़ा विरोध किया। गांव के इमाम ने विभिन्न इमामों को गांव में बुलाकर जमाअत के ख़िलाफ एक मोर्चा खड़ा कर दिया लेकिन ख़ुदा तआला की कृपा से इस जमाअत के लोग अपने बैअत के वादा पर मज़बूती से खड़े हैं। वर्ष के दौरान जब यहां मस्जिद का निर्माण शुरू हुआ तो ग़ैर जमाअत मौलवी खुलकर विरोध करने लगे। लोगों को कहने लगे कि अहमदियों की मस्जिद से बेहतर है कि तुम एक चर्च में जाकर नमाज़ पढ़ लो। जो मिस्त्री मस्जिद का निर्माण कर रहा था उसके घर जाकर उसे भी धमकी दी कि वह मस्जिद का निर्माण न करे लेकिन इन सभी खतरों और परिस्थितियों के बावजूद अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत को यहां मस्जिद बनाने की तौफीक़ मिली। और इस मस्जिद के दो तेरह मीटर ऊंचे मीनार भी हैं और बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद है और 375 लोग इसमें नमाज़ भी अदा कर सकते हैं।

फिर हम देखते हैं कि अल्लाह तआला ख़वाबों के द्वारा कैसे मार्गदर्शन करता है। सैन पीदरो आइवरी कोस्ट का क्षेत्र है। उस में एक शहर में रोया के माध्यम से एक दोस्त ज़ोनम अहमद साहिब ने बैअत की। महोदय का संबंध ईसाई धर्म से था लेकिन बाद में इस्लाम स्वीकार कर के वहाबी फिर्क़ा में शामिल हो गए। वह बताते हैं कि इस्लाम स्वीकार करने के बाद मैंने नमाज़ सीखी और नियमित मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा करना शुरू कर दी। इसी समय मैंने ख़्वाब में दो बार एक बुज़ुर्ग को देखा पहली बार सपने में ही मुझे पता चला कि यह व्यक्ति ख़ुदा का नबी है मैंने समझा कि शायद यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई है। कुछ समय बाद एक बार फिर मैंने सपने में देखा कि इन्हीं बुज़ुर्ग की तस्वीर टीवी पर आ रही है और कोई साथ ही कुरआन की तिलावत कर रहा है और टीवी के नीचे फ्रेंच में लिखा है कि मिशन इस्लामिक अहमदिया। इस सपने के बाद मैंने मस्जिद के इमाम साहिब से जमाअत अहमदिया के बारे में पूछा। पहले तो इमाम साहिब ने टाल मटोल से काम लिया मगर आग्रह करने पर कहने लगे कि यह लोग अहमदी जो हैं यह मुसलमान नहीं हैं तुम्हें क्या हो गया है किस ने तुम्हें बहकाया है क्यों तुम अपना इस्लाम बर्बाद करने पर तुले हुए हो इस शहर में तो अहमदियत नहीं है जिस शहर में वह था वहां अहमदियत नहीं थी। इस पर उन्होंने मौलवी साहिब से कहा कि मुझे किसी ने नहीं बहकाया क्योंकि मैं तो अभी तक एक अहमदी से मिला ही नहीं। मुझे तो ख़ुदा तआला ने अहमदियत का रास्ता दिखलाया है। घर आकर मुझे और अधिक चिंता होनी शुरू हो गई। कहते हैं कि आख़िर यह अहमदी कौन लोग हैं और इमाम साहिब उन्हें काफिर क्यों कह रह हैं। कहते हैं कि इस पर मैंने ख़ुदा तआला से नमाज़ में बहुत दुआ की कि हे ख़ुदा! तू मुझे सीधा रास्ता दिखला। मैं अपने क्षेत्र के दोस्तों से जमाअत के बारे में पूछता रहा लेकिन कोई भी संपर्क का साधन नहीं मिल रहा था। अंत एक दिन एक दोस्त ने बताया कि एक शहर दलवा (Dalwa) में अहमदी मौजूद है। इसलिए लोगों से पूछते पुछाते मिशन हाउस पहुंच गया जहां मिशनरी साहिब ने जमाअत का परिचय करवाया। वहाँ मिशन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखकर मैं हैरान हुआ। पूछने पर मिशनरी साहिब ने बताया कि यही इमाम महदी और मसीह मौऊद हैं तो मैंने उसी समय वहां अहमदियत स्वीकार कर ली और मिशनरी को बताया कि यही बुज़ुर्ग मुझे दो बार ख़वाब में नज़र आए थे। महोदय हमारे मुबल्लिग़ को कहने लगे कि बैअत फार्म तो मैंने अभी भरा है लेकिन अहमदी मैं उस दिन से हूँ जब ख़ुदा तआला ने मुझे सपने में मार्गदर्शन कर दिया था। अब महोदय बैअत के बाद नियमित चंदे के निज़ाम में शामिल हो गए हैं घर में नियमित नमाज़ और तहज्जुद भी अदा करते हैं अपने क्षेत्र में इमाम सहित अन्य लोगों को तब्लीग़ कर रहे हैं। अब यह अल्लाह तआला का काम कैसे मार्गदर्शन कर रहा है और दूसरी ओर कुछ लोग हैं जो संदेह में पड़े हुए हैं क्योंकि उनकी निय्यतें साफ नहीं हैं

फिर बेल्जियम से मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब लिखते हैं कि बेल्जियम जमाअत में नए अहमदी इदरीस साहिब ने सपने में एक बुज़ुर्ग को देखा अब एक ओर अफ्रीका की बात हो रही है एक ओर यूरोप की बात हो रही है। प्रत्येक स्थान पर कैसे अल्लाह तआला का ही सामर्थय है। कहते हैं कि उस समय तक वह जमाअत अहमदिया के बारे में कुछ नहीं जानते थे। एक दोस्त जिन्होंने एक बुज़ुर्ग को सपने में देखा। फिर दो साल पहले एक दिन टीवी पर विभिन्न चैनलों को बदल रहे थे कि अचानक एम.टी.ए अल् अर्बिया पर नज़र पड़ी। महोदय ने एम.टी.ए पर जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखी तो उन्हें तुरंत अपना ख़वाब याद आ गया उन्होंने सपने में इसी बुज़ुर्ग को देखा तो उन्होंने नियमित रूप से एम.टी.ए देखना शुरू कर दिया इस तरह उनका दिल अहमदियत की ओर झुकना शुरू हो गया। तब उन्होंने ने ख़ुद कोशिश कर के बेल्जियम जमाअत का पता तलाश किया और मिशन हाऊस पहुंचे और कहने लगे कि बैअत करने के लिए आया हूँ। मुरब्बी साहिब ने उन्हें कहा कि पहले जमाअत के बारे में कुछ पढ़ तो लें अधिक जानकारी प्राप्त कर लें फिर फैसला करें। उन्होंने कहा कि मुझे मेरे सारे सवालों के जवाब मिल गए हैं और जब उन्हें अधिक परिचय करवाया गया मतभेद वाले मस्लों के बारे में भी बातें की गईं तो ख़ुद ही तर्क देकर जवाब देते थे। कहने लगे मेरा दिल पहले ही संतुष्ट था इसलिए उन्होंने बैअत कर ली। अब देखें जैसा कि मैंने कहा कि अगर अफ्रीका के दूर देशों में अल्लाह तआला दिल खोल रहा है तो यूरोप में भी खोल रहा है।

फिर माली अफ्रीका का एक देश है वहां के मुबल्लिग़ कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग मिशन हाऊस आए और कहा कि बैअत करना चाहता हूँ। जब उनसे बैअत का कारण पूछा तो कहने लगे कि कल रात तुम लोगों का रेडियो पर सीधा कार्यक्रम सुन रहा था। जिस में कुछ लोग सीधी कॉल करके जमाअत अहमदिया को अपशब्द कह रहे थे। मैंने कार्यक्रम के दौरान ही ख़ुदा तआला के सम्मुख दुआ की कि हे अल्लाह इन लोगों में से जो भी सहीह है उस ओर मेरा मार्गदर्शन कर और दुआ करते करते ही कहते हैं मेरी आँख लग गई। रात मैंने ख़वाब देखा कि एक ओर जमाअत अहमदिया के मुबल्लिग़ हैं और दूसरी ओर जमाअत अहमदिया के विरोधियों के और उनके

बीच बहस हो रही है मगर जब अहमदियत के विरोधी अहमदी मुबल्लिग़ को जवाब नहीं दे पाते तो मुबल्लिग़ को एक गड्ढे में फेंक कर मिट्टी डालना शुरू कर देते हैं। इसी दौरान आसमान से एक बुज़ुर्ग दिखाई देते हैं जो कहते हैं कि मैं महदी हूँ और हाथ बढ़ाकर अहमदी मुबल्लिग़ की जान बचाते हैं। इसके बाद कहते हैं कि मेरी आँख खुल गई अब अहमदियत की सच्चाई से संबंधित मेरे दिल में कोई शंका नहीं है इसलिए मैं बैअत करने के लिए आ गया हूं।

फिर एम.टी.ए के माध्यम से अल्लाह तआला कैसे रास्ते खोलता है। फ्रांस के एक दोस्त मुर्तज़ा साहिब पहले मुसलमान थे, अहमदी नहीं थे। इस क्षेत्र में रहते थे जहाँ कोई अहमदी भी नहीं था कि इस साल बैअत की। कहते हैं मैंने बचपन में आठ या नौ साल की उम्र में एक किताब पढ़ी जिसका नाम "मसीहुद्दजाल" था। इस पुस्तक में तीन गिरोहों का उल्लेख था। एक कल्याण पाने वाले दूसरे कायर और तीसरे शहीद। उस समय मैंने ख़ुदा तआला से दुआ की कि हे अल्लाह मुझे कल्याण पाने वाले समूह में शामिल करना। कुछ समय बाद हम हिजरत कर के फ्रांस आ गए यहां एक दिन मैंने टीवी पर एम.टी.ए चैनल देखा और इस तरह जमाअत से परिचय हुआ और नियमित एम.टी.ए देखने लगा यहां तक कि जमाअत की सत्यता को मैं दिल से मानने लगा मगर बैअत न की। किसी बीमारी के कारण से काफी समय से मेरे यहाँ कोई संतान न थी। एम.टी ए पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो दुआएं आती हैं वह मैंने पढ़नी शुरू कीं और उन दुआओं की बरकत से ख़ुदा तआला ने कुछ ही समय में मुझे औलाद से नवाज़ दिया हालांकि इससे पहले डॉक्टर कह चुके थे कि मेरे यहां कोई औलाद नहीं हो सकती। इसलिए इस वर्ष 2016 ई में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता का निशान देखकर मैंने बैअत कर ली।

बच्चों के कार्यक्रमों की और बच्चों की नेक तरबियत का भी लोगों पर बड़ा प्रभाव है। बेनिन के मुबल्लिग़ लिखते हैं आतसे (Atesse) में मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर बच्चों ने तिलावत कुरआन और अरबी क़सीदा पेश किया। इस अवसर पर पड़ोसी गांव के ग़ैर अहमदी इमाम इसहाक साहिब कहने लगे। बच्चों ने जो तिलावत कुरआन और अरबी क़सीदा पेश किया है उससे मेरे दिल पर गहरा असर हुआ है। अगर वह बचपन से इतनी अच्छी बातें नहीं सीख रहे होते तो कभी भी इतने अच्छे तरीके से पेश न कर सकते। इससे पता चलता है कि जमाअत अहमदिया बच्चों की अच्छी तरबियत कर रही है। वहां अपनी तकरीर में कहा कि मैं माता पिता से अनुरोध करता हूँ कि अपने बच्चों को ज़रूर मस्जिद भेजा करें। अगर एक तरफ इस्लाम सिखाने वाले बच्चों से आत्मघाती हमले करवा रहे हैं दूसरी ओर अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया की तरबियत के प्रभाव से ग़ैर भी इस ओर ध्यान दिला रहे हैं कि अपने बच्चों की तरबियत करने के लिए जमाअत की मस्जिदों में भेजो।

फिर बच्चों को तरबियत कर के उन्हें इस्लामी शिक्षाऐं सिखाना और समाज का लाभदायक वुजूद बनाना हमारा काम है। इसलिए तरबियत करते हैं। इसके परिणाम स्वरूप भी लोगों पर जमाअत का प्रभाव है जैसा कि मैंने पहले भी उदाहरण दिया।

सिएरा लियोन अब एक और देश है वहाँ बो क्षेत्र की जमाअत सान में हमारे एक मुअल्लिम बड़ी मेहनत से काम कर रहे हैं उन्होंने अपनी जमाअत में अहमदी और ग़ैर अहमदी बच्चों की क्लास लेना शुरू किया, जिस में वे अपने मूल धार्मिक शिक्षा सिखाते थे। इन की कक्षा में ग़ैर अहमदी बच्चा भी हिस्सा लेने लगा। उसका नाम अहमद पोंटी था। काफी कुछ सीख गया है। एक दिन उस बच्चे का पिता अब्दुल जो एक ग़ैर अहमदी था। वुज़ू कर रहा था उस पर बच्चा जिसकी उम्र ग्यारह बारह साल होगी उसके पास गया और अपने पिता को बताया कि आप सही वुज़ू नहीं कर रहे तब बच्चा लोटे में पानी भर कर लाया और अपने पिता को वुज़ू करने का सही तरीक समझाया और साथ ही उसने वुज़ू करने की दुआ और मस्जिद जाने की दुआ भी सिखाई। उसका पिता यह सब देखकर बहुत ख़ुश हुआ और पूछा कि यह सब तुम ने कहाँ से सीखा है उसने बताया कि अहमदिया मस्जिद में होने वाली कक्षा में यह सब कुछ सिखाया जाता है जिस पर उसके पिता ने बहुत ख़ुशी जताई और हमारे मुअल्लिम साहिब के पास आया और उनसे कहा कि आज के बाद मेरा बेटा आपके हवाले है आप जो चाहे इससे काम लें और उस की अच्छी तरबियत जारी है। तो ये लोग जो अब अहमदी नहीं हुए उन पर भी बच्चों की जिस रंग में जमाअत प्रशिक्षण करती है उसका बड़ा प्रभाव है और यह बात सभी अहमदी माता पिता को याद रखनी चाहिए और जमाअत के निज़ाम को भी याद रखनी चाहिए। मुरब्बियों और मुअल्लिमों को भी याद रखना चाहिए कि बच्चों की तरबियत की ओर विशेष रूप से ध्यान दें एक तो अगली नस्ल को संभालने की ज़िम्मेदारी है और यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जो हमारे ज़िम्मा है दूसरे बच्चों के माध्यम से ही तब्लीग़ भी और प्रशिक्षण के भी अधिक रास्ते खुलते हैं।

पड़ोसियों का अधिकार देना इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है और कुरआन शरीफ में भी आदेश है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस पर बहुत ज़ोर दिया है। आइवरी कोस्ट से हमारे मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक नए अहमदी अदमा (Adama) साहिब इस साल बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए हैं वह बताते हैं कि अहमदियत स्वीकार करने से पहले अन्य ग़ैर जमाअत मस्जिदों में नमाज़ पढ़ता था और मैंने अहमदियत के बारे में इतनी नकारात्मक बातें सुन रखी थीं कि अहमदिया मस्जिद के क़रीब होने के बावजूद दूसरी मस्जिद जाकर नमाज़ पढ़ने को प्राथमिकता देता था। कहते हैं एक बार जब मैं सख्त बीमार हुआ तो अहमदिया मस्जिद के इमाम मेरी अयादत के लिए आए है इस का मेरे दिल में असाधारण प्रभाव हुआ। स्वस्थ होने के बाद मैंने अहमदिया मस्जिद जाकर नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया और मस्जिद में हुए दर्स और उपदेश द्वारा अहमदियत में रुचि पैदा हुई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें पढ़ीं तो दिल इस विश्वास पर स्थापित हो गया कि अगर आज कोई जमाअत कुरआन और सुन्नत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रतिबद्ध है तो वह जमाअत अहमदिया ही है तो मैंने बैअत कर ली और बैअत के कारण मेरे बच्चों ने भी जमाअत में रुचि लेना शुरू कर दिया। अब कहते हैं मेरा बेटा जो माध्यमिक स्कूल में पढ़ रहा है उसकी इच्छा है कि वह माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद जामिया अहमदिया में अध्ययन करे और बतौर वक्फ ज़िन्दगी धर्म की सेवा करे।

अल्लाह तआला की कृपा से जिस तरह विरोधी हमारे रास्ते में रोक डालने की कोशिश करते हैं विरोध में बढ़ते चले जा रहे हैं अल्लाह तआला इसी तरह उनके मुंह बंद करने के साधन भी कर रहा है और जो नए अहमदी शामिल होते हैं उनके ईमान में वृद्धि का सामान कर रहा है।

यादगीर, कर्नाटक भारत के अमीर साहिब लिखते हैं कि पिछले साल यहां ग़ैर जमाअत की तरफ से भारी विरोध शुरू हुआ और विरोधी बाहर से अपने विद्वानों को बुलाकर जमाअत के ख़िलाफ भाषण देते रहे। भारत पाकिस्तान में तो जमाअत का विरोध अन्तिम सीमा तक पहुंचा हुआ है। कहते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर बहुत गंदे और झूठे आरोप लगाए गए। जमाअत के ख़िलाफ जनता को भड़काया गया जिस पर कुछ कम अक्ल लोगों ने जमाअत के मित्रों के साथ बहुत बदतमीज़ी का व्यवहार किया। जमाअत के ख़िलाफ पर्चे प्रकाशित किए। इन्हीं दिनों में एक अहमदी व्यक्ति जो जमाअत से बिल्कुल कटा हुआ था किसी प्रकार भी जमाअत से संबंध नहीं रखना चाहता था दुर्भाग्य से यह अलग हो गया उसे इन विरोधियों ने डरा-धमका कर पैसे आदि का लालच देकर अपने साथ मिलाया और उस को हार आदि पहना कर सारे शहर में हंगामा कर दिया कि हम ने एक कादियानी काफिर को मुसलमान बना लिया। समाचार पत्रों आदि में बहुत ग़लत बयानी की गई और इस व्यक्ति के माध्यम से जमाअत का बहुत विरोध किया गया। इस व्यक्ति ने भी जमाअत के ख़िलाफ अपशब्द कहे। जब इस मामले के बारे में इस से जमाअत के लोगों ने बात की। जमाअत ने उस व्यक्ति से संपर्क किया कि तुम्हें तकलीफ क्या है तो उसने कहा, यह जो बातें जो अखबारों में प्रकाशित हुई हैं वह कभी मैंने नहीं कहीं। मेरी कुछ मजबूरियां हैं जो मैं आपको बता नहीं सकता इस कारण से मैं उनके साथ हूँ। कहते हैं कि अब इस बात को एक साल ही बीता था कि यह व्यक्ति अल्लाह तआला की सजा से पकड़ा गया बिल्कुल स्वस्थ व्यक्ति था अचानक चक्कर खाकर गिर गया एक तरफ हाथ-पैर से पक्षघात हो गया। ग़ैर अहमदियों ने उसका कोई साथ न दिया। हमारे ख़ुद्दाम ही उस समय में भी उस के काम आए और अस्पताल लेकर उसे जाते रहे। डॉक्टर ने कहा कि इस का अब जीवित रहना मुश्किल है अंत अपने अंजाम को पहुंचा। उसका बेटा बड़ा श्रद्धावान अहमदी है और उसके बेटे पर भी ग़ैर अहमदियों ने बड़ा दबाव डाला लेकिन वह दृढ़ है और यहाँ तक कि उसने इस विरोध के कारण जो पिता ने किया थी अपने पिता की नमाज़ जनाज़ा भी नहीं पढ़ी। अल्लाह तआला उस के भी ईमान में भी मज़बूती दे।

अल्लाह तआला के फज़लों की यह कुछ घटनाऐं हैं। जो मैंने प्रस्तुत की हैं। असंख्य ऐसी घटनाएं हैं। अल्लाह तआला करे कि हम उसके फज़लों को हमेशा अवशोषित करने वाले बनते चले जाएं और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले भी हों। हम पर जो अल्लाह तआला ने अहमदियत में शामिल होने का यह उपकार फरमाया है अल्लाह तआला हमें दृढ़ता भी प्रदान फरमाए और ईमान और विश्वास में भी बढ़ाता चला जाए।

☆ ☆ ☆

सेहत के आदाब

सेहत खुदा की बहुत बड़ी नेमत है और बहुत बड़ी अमानत भी। सेहत की कद्र कीजिए और इसकी हिफाज़त में कभी लापरवाही ना कीजिए। एक बार जब सेहत बिगड़ जाती है,तो फिर बड़ी मुश्किल से बनती है। जिस तरह छोटी सी दीमक बड़ी-बड़ी लाईब्रेरियों को चाट कर तबाह कर डालती है,उसी तरह सेहत के मामले में गफ़लत बरतना और उसकी हिफ़ाज़त में कोताही करना लापरवाही भी है और खुदा की नाशुक्री भी।

इन्सानी जिन्दगी की असल ख़ूबी अक्ल, इख़लाक, ईमान और सलीक़ा है,और अक्ल व अख़लाक ,ईमान और सलाका की सेहत का दारोमदार भी बड़ी हद तक जिस्म की सेहत पर है। अक़्ल व दिमाग़ को बढ़ाने,अख़लाकी बड़ाई के तकाज़े और धार्मिक ज़िम्मेदारियों को अदा करने के लिए जिस्म की सेहत बुनियाद की हैसियत रखती है। कमज़ोर और बीमार जिस्म में अक़्ल व दिमाग़ भी कमज़ोर होते हैं और उनकी कारगुज़ारी भी निहायत ही हौसला तोड़ने वाली होती है और जब ज़िन्दगी उमंगों ,वलवलों और हौसलों से दूर हो,इरादे कमज़ोर हों और भावनाए ठंडी हों तो ऐसी बे-रौनक ज़िन्दगी कमज़ोर जिस्म के लिए बोझ बन जाती है।

ज़िन्दगी में मोमिन को जो बड़े कारनामे अंजाम देने उसके लिए ज़रुरी है कि जिस्म में जान हो,अक़्ल और दिमाग़ में ताक़त हो, इरादों में मज़बूती हो, हौसलों में बुलंदी हो और ज़िन्दगी वलवलों ,उमगों और अच्छे जज़्बात से भरपूर हो। सेहतमंद और ज़िन्दा दिल लोगों से ही ज़िन्दा कौमें बनती हैं और ऐसी ही क़ौमें ज़िन्दगी के मैदान में बड़ी कुरबानियाँ देकर अपनी जगह पैदा करती हैं और ज़िदगी का मूल्य और महत्तव समझाती हैं।

2- हमेशा हँसते-मुस्कराते और चाक़ व चौबन्द रहिए । हँसकर ,मुस्कराकर ,अपने अख़लाक़ और ज़िन्दा-दिली से ज़िन्दगी को सजाइए,दिलचस्प और सेहत मन्द बनाए रखिए। ग़म, गुस्सा,रंज,फ़िक्र,हसद,जलन,बुरा चाहना,तंग-नज़री,मुर्दा--दिली,और दिमाग़ी उलझनों से दूर रहिए।

ये अख़लाकी बीमारियाँ और ज़ेहनी उलझनें मैदे पर बहुत बुरा असर डालती हैं और मैदे की ख़राबी सेहत की बदतरीन गुश्मन है। नबी(सल्ल)का इरशाद हैं-

"सीधे-सादे रहो,बीच का रास्ता अपनाओ और हँसते-मुस्कराते रहो।"

(मिश्कात)

एक बार नबी (सल्ल) ने एक बूढ़े आदमी को देखा की वह अपने दो बेटों का सहारा लिए हुए उनके बीच में घसीटता हुआ जा रहा है। आपने पुछा,"इस बूढ़े को क्या हो गया है?"लोगों ने बताया की इसने बैतुल्लाह तक पैदल जाने की नज़र मानी थी। नबी (सल्ल) ने इरशाद फ़रमाया -

"खुदा इससे बेनियाज़ है कि यह बूढ़ा ख़ुद को अज़ाब में डाले और उस बूढ़े को हुक्म दिया कि सवार होकर अपना सफ़र पूरा करो।"

हज़रत उमर (रज़ि) ने एक बार एक जवान आदमी को देखा कि मरियल चाल चल रहा है। उन्होंने उसको रोका और पूछा ,"तुम्हें क्या बीमारी है? उसने कहा "कोई बीमारी नहीं है।" उन्होनें अपना दुर्रा उठाया और उसको धमकाते हुए कहा- "रास्ते पर पूरी ताकत के साथ चलो।"

नबी (सल्ल) जब रास्ते पर चलते तो निहायत जमे हुए कदम रखते और इस तरह ताकत के साथ चलते कि जैसे ढलान में उतर रहें हों।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि) कहते हैं-

"मैंने नबी (सल्ल) से ज़्यादा मुस्कराने वाला कोई आदमी नहीं देखा।" (तिर्मज़ी)

नबी करीम (सल्ल) ने अपनी उम्मत को जो दुआ सिखाई है,उसका भी एहतिमाम कीजिए-

अल्लाहुमा-म-अऊज़ु बिक मिनल हम्मि वल-हुज़्नि वल-अज्ज़ि वल-कसलि व ज़ल -इददैनि व ग़ल-बतिर्जाल (बुख़ारी,मुस्लिम)

"खुदा मैं अपने को तेरी पनाह में देता हुँ परेशानी से,ग़म से,बेचारग़ी से,सुस्ती और काहली से,क़र्ज़ के बोझ से और इस बात से कि लोग मुझ को दबाकर रखें।"

3. अपने जिस्म पर बरदाश्त से ज़्यादा बोझ न डालिए। जिस्म की ताक़तों को बरबाद न कीजिए। जिस्म की ताक़तों का यह हक़ है कि उनकी हिफ़ाज़त की जाए और उनसे बरदाश्त के मुताबिक काम लिया जाए।

हज़रत आइशा (रज़ि) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल) का इरशाद है-

" उतना ही अमल करो, जितना कर सकने की तुम्हारे अन्दर ताकत हो,इसलिए कि खुदा नहीं उकताता,यहाँ तक कि ख़ुद तुम ही उकता जाओ।" (बुख़ारी)

हज़रत अबू क़ैस (रजि) फरमाते हैं कि वह नबी(सल्ल) कि ख़िदमत में ऐसे वक्त हाज़िर हुए जबकि नबी (सल्ल) ख़ुतबा दे रहे थे। हज़रत अबू क़ैस (रज़ि) धूप में खड़े हो गए। नबी (सल्ल) ने हुक्म दिया तो वह साए की तरफ़ हट गए।

(अल अदबुल मुफ़रद)

नबी (सल्ल) ने इससे भी मना फ़रमाया कि आदमी जिस्म का कुछ हिस्सा धुप में रहें और कुछ साए में ।

क़बीला बाहिला की एक औरत मुजीबा (रज़ि) वर्णन करती हैं कि एक बार मेरे अब्बा नबी (सल्ल)के यहाँ धर्म सीखने के लिए गए और धर्म की कुछ अहम बातें हासिल करके घर वापिस आ गए। फिर एक साल के बाद दोबारा आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी (सल्ल) उन्हें बिल्कुल न पहचान सके तो उन्होंने पूछा ,"हे अल्लाह के रसूल क्या आप ने मुझे पहचाना नहीं? नबी (सल्ल) ने फ़रमाया ,"नहीं ,मैंने तो तुम्हें नहीं पहचाना। अपना परिचय कराओ " उन्होंने कहा में कबीला बाहिला का एक आदमी हूं , पिछले साल भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ था। तो नबी (सल्ल) ने कहा ,"यह तुम्हारी हालत क्या हो रही है ? पिछले साल जब आए थे तो तुम्हारी शक्ल व सूरत और हालत बड़ी अच्छी थी।" उन्होनें बताया की जब से आपके पास से गया हूं। उस वक्त से अब तक बराबर रोज़े रख रहा हूँ ,सिर्फ रात में खाना खाता हूँ ।" नबी (सल्ल) ने फ़रमाया तुम ने ख़्वाह मख़्वाह अपने को तकलीफ़ में डाला (और अपनी सेहत बर्बाद कर डाली)।" फिर आपने हिदायत फरमाई कि रमज़ान में महीने भर के रोज़े रखो और उसके अतिरिक्त हर महीने एक रोज़ा रख लिया करो। उन्होंने कहा ," हुज़ूर कुछ और अधिक की इजाज़त दीजिए

नबी (सल्ल) ने फ़रमाया,अच्छा "हर महीने में तीन दिन"। उन्होंने कहा हुज़ूर कुछ और बड़ा दीजिए।" नबी (सल्ल) ने फ़रमाया ,अच्छा हर साल मुहर्रम के महीने में रोज़े रखो और छोड़ दो। ऐसा ही हर साल करो।"यह इरशाद फ़रमाते हुए नबी (सल्ल) ने अपनी तीन उँगलियों से इशारा फ़रमाया उनको मिलाया,फिर छोड़ दिया (इस तरह यह बताना चाहते थे कि रज़ब शव्वाल ,जीक़अदा और ज़िल हिज्ज़ा में रोज़े रखा करो और किसी साल छोड़ भी कर दिया करो। नबी (सल्ल) का इरशाद है

"मोमिन के लिए मुनासिब नहीं है कि वह अपने को ज़लील रुसवा करे।"लोगों ने पूछा के भला मोमिन अपने आप को कैसे ज़लील करता है?" इरशाद फ़रमाया "अपने आप को बर्दाशत न होने के काबिल आज़माइश में डाल देता है।"

4- हमेशा सख्ती सहने ,मेहनत -मशक्कत करने और बहादुरी दिखाने वाली ज़िन्दगी गुज़ारिए। हर तरह की सख़्तियाँ झेलने और मुशकिल से मुशकिल वक्त का मुकाबला करने की आदत डालिए और सख़्त जान बन कर सादा और मुजाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारने का एहतिमाम कीजिए। आराम-तलब सहल पसन्द, नज़ाकत पसन्द, काहिल ,पस्त हिम्मत और दुनिया परस्त न बनिए ।

नबी (सल्ल) जब हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि) को यमन का गवर्नर बनाकर भजने लगे तो हिदायत फ़रमाई -

"मुआज़ अपने को आराम तलबी से बचाए रखना ,इसलिए के ख़ुदा के बन्दे आराम तलब नहीं होते।"

और हज़रत अबू अमामा कहती हैं कि नबी (सल्ल) ने फ़रमाया -

"सादा (साधारण) ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान की निशानी है।"

(अबु दाऊद)

नबी (सल्ल) सादा और मुजाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारते थे और हमेशा अपनी मुजाहिदाना ताकत को बचाए रखने और बढ़ाने की कोशिश करते थे। आप (सल्ल) तैरने में भी दिलचस्पी रखते थे ,इसलिए की तैरने से बेहतरीन कसरत हो जाती है। एक बार तालाब में नबी (सल्ल) और नबी (सल्ल) के कुछ साथी तैर रहे थे। नबी (सल्ल) ने तैरने वालों में से हर एक की जोड़ी मुकर्रर फ़रमा दी कि हर आदमी अपने जोड़े की और तैर कर पहुँचे और जाकर उनकी गरदन पकड़ ले।

नबी (सल्ल) को सवारी के लिए घोड़ा बहुत पसन्द था। नबी (सल्ल) अपने घोड़े की ख़ुद ख़िदमत फ़रमाते,अपने हाथ से उसका मुँह पोंछते और साफ़ करते। उसके सिर के बालों को अपनी उँगलियों से कंघी करते और कहते ,"भलाई इसकी पेशानी से कियामत तक के लिए जुड़ी हुई है।"

हज़रत उक़्बा (रज़ि) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल) ने फ़रमाया

"तीर चलाना सीखो। घोड़े पर सवार हुआ करो। तीरंदाज़ी करने वाले मुझे घोड़ों पर सवार होने वालों से भी ज़्यादा पसन्द हैं और जिस ने तीरंदाज़ी सीखकर छोड़ दी

शेष पृष्ठ 8 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 29 September 2016 Issue No. 30

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हज़रत मुंशी मुहम्मद अफज़ल साहिब रज़ि अल्लाह

हज़रत मुंशी मुहम्मद अफज़ल साहब लाहौर निवासी थे, बिल्कुल प्रारंभिक दिनों में बैअत की तौफीक पाई और उसके बाद जल्द ही मम्बासह (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) रेलवे की नौकरी के लिए चले गए। 1902 ई. में वहां से रिटायर होने के बाद कादियानी में रहने लगे। सितंबर 1902 ई. में एक अखबार " अल कादियान " कादियानी जारी किया। लेकिन अगले ही महीने यानी अक्टूबर 1902 ई. में हुज़ूर ने इस अखबार का नाम बदल कर "अल् बदर " रख दिया। आप अपने इस अख़बार में बड़े नियमित रूप से हज़रत अक़्दस की डायरी प्रकाशित करते थे। जिस से जमाअत के दोस्तों की एक बड़ी संख्या बड़ी उत्सुकता के साथ अख़बार के खरीदार बने। यहां तक कि अपनी वफात से कुछ मित्रों को यह चिंता हुई कि अब अख़बार कैसे निकलेगा लेकिन बाद में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब की संपादन में यह अखबार निकलता रहा। 313 बड़े सहाबा में आपका नाम 67 नंबर पर शामिल है। आप ने मार्च 1905 में वफात पाई।

आपकी वफात पर हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोट ने फरमाया:

" इस मरहूम भाई के जीवन का गहरा अध्ययन करके मुझे एक बात अजीब नज़र आई है और वही इस लायक है कि सच्चाई के चाहने वालों के लिए नमूना बने ...

मरहूम के दिल में एक ज़माने से ख़याल था कि कादियान में एक अख़बार निकाला जाए ... अल बदर निकला, अलग अलग समय पर नहीं। शुरू से आख़री सांस तक इस के रास्ते में उन्हें मुसीबतें और बाधाएं पेश आईं। शायद कम ही लोग जानते होंगे मरहूम और उसके ख़ानदान ने कभी-कभी दिन को आधा पेट भोजन किया और रात को भूखा सो गए और अक्सर सूखे नमक मिर्च के साथ कच्ची पक्की सी रोटियां खाकर गुज़ारा किया। कच्ची पक्की मैं इसलिए कहा कि ईंधन खरीदने की तौफीक भी न होती। न केवल बच्चे फटे पुराने कपड़ों में इधर उधर फिरते नज़र आते बल्कि सुंदर युवा पिता भी इसी रहम वाली सूरत में बाहर निकलता और कारोबार करता है। एक योग्य और बहुतों से बेहतर मुंशी अंग्रेजी में ऊंचा स्थान रखने वाला। बाहर निकल कर ख़ूब कमाने और अच्छा गुज़रा करने वाले को कौन सी बात थी जिस ने उसे ऐसी ज़ाहिदाना ज़िन्दगी अपनाने पर मजबूर किया जवाब साफ है हज़रत मसीह मौऊद की पहचान करने और आप के साथ रहने की लज़्ज़त रमणीय।

अत: मरहूम के अख़लाक में यह दृढ़ता मुझे इस योग्य उत्तम आदर्श नज़र आई है। यही वह नूर है जिस से अल्लाह मिलता है। अल्लाह हमारे युवा भाई को रहमत में जगह दे और उनकी दृढ़ता के नमूने से बहुतों को लाभ होगा। आमीन (अल बदर 6 अप्रैल 1905 ई पृष्ठ 4)

122 वां
जलसा सालाना क़ादियान

(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)

दिनांक 26, 27, 28 दिसम्बर 2016 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26, 27 और 28 दिसम्बर 2016 ई.(सोमवार, मंगलवार व बुधवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

शेष सेहत को आदाब

उस ने ख़ुदा की नेमत की नाकद्री की।"(अबु दाऊद)

"मेरी उम्मत पर वह वक़्त आने वाला है जब दुसरी कौमें उस पर इस तरह टूट पड़ेंगी जिस तरह खाने वाले दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं किसी ने पुछा "हे अल्लाह के रसूल क्या उस ज़माने में हमारी संख्या इतनी कम हो जाएगी कि हमें निगल लेने के लिए कौमें एक जुट होकर हम पर टुट पड़ेंगी। फ़रमाया नहीं उस वक़्त तुम्हारी संख्या कम न होगी बल्कि तुम बहुत बड़ी संख्या में होगे लेकिन तुम बाढ़ में बहने वाले तिनकों की तरह बेवज़न होगे। तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रौब निकल जाऐगा और तुम्हारे दिलों में पस्सत हिम्मती घर कर लेगी। इस पर एक आदमी ने पुछा "हे अल्लाह के रसूल यह पस्सत हिम्मती किस वजह से आ जाएगी? " नबी (सल्ल) ने फ़रमाया " इस वजह से कि तुम दुनिया से मुहब्बत और मौत से नफरत करने लगोगे।"

5 . औरतें भी मेहनत व मशक्कत की ज़िन्दगी गुज़ारें। घर के काम काज अपने हाथों से करें। चलने फिरने और तकलीफ़ बर्दाशत करने की आदत डालें। आराम तलबी,सुस्ती और आराम पसन्दी से बचें और बच्चों को भी शुरु से ही मेहनती और सख़्त जान बनाने की कोशिश करें। घर में नौकर हो तो भी अपने बच्चों को बात-बात में नौकर का सहारा लेने से मना करें और आदत डलवाएँ कि बच्चे अपना काम ख़ुद अपने हाथों से करें। सहाबिया औरतें अपने घरों का काम अपने हाथ से ख़ुद करती थीं। रसोई घर का काम ख़ुद करतीं ,चक्की पीसतीं, पानी भर कर लातीं,कपड़े धोतीं, सिलाई-बुनाई का काम करतीं और मेहनत मशक़्क़त की ज़िन्दगी गुज़ारतीं और ज़रुरत पड़ने पर लड़ाई के मैदान में घायलों की मरहम पट्टी करने और पानी पिलाने का इन्तिज़ाम भी संभाल लेती।

इसी तरह औरतों को भी अपनी सेहत की हिफाज़त का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हलकी सैर या कसरत करनी चाहिए। इससे औरतों की सेहत भी बनी रहती है अख़लाक़ भी सेहत मन्द रहतें हैं और बच्चों पर भी इसके अच्छे असरात पड़ते हैं इस्लाम की नज़र में पसन्दीदा बीवी वही है जो घर के काम काज में लगी रहती हो और जो रात दिन इस तरह अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों में लगी हुई हो कि उसके चेहरे से मेहनत की थकन भी ज़ाहिर हो और बावर्चीख़ाने की कालिख और धुएँ का धुआँसा भी ज़ाहिर हो रहा हो । नबी (सल्ल)का इरशाद है -

"मैं और धूमिल गालों वाली क़ियामत के दिन इस तरह होगें ।"

(आपने शहादत की उगँली और बीच की उगँली को मिलाते हुए बताया)

6- सुबह जल्दी उठने की आदत डालिए। सोने में सन्तुलन रखिए। न इतना कम सोइए कि जिस्म को पूरी तरह आराम व सुकून न मिल सकें और जिस्म में थकन और टूटन रहे, और न इतना ज़्यादा सोइए कि सुस्ती और काहिली पैदा हो । रात को जल्द सोने और सुबह को जल्द उठने की आदत डालिए ।

सुबह उठकर ख़ुदा की बन्दगी बजा लाइए और बाग़ या मैदान में टहलने और तफ़रीह करने के लिए निकल जाइए। सुबह की ताज़ा हवा सेहत पर बहुत अच्छा असर डालती है। नबी (सल्ल) बाग़ की तफ़रीह को पसन्द फ़रमाते थे और कभी कभी ख़ुद भी बाग़ में तशरीफ़ ले जाते थे ।

आसमा तय्यबा , कादियान

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad